सुख–दुःख दोनों रहते जिसमें ....

सुख–दुःख दोनों रहते जिसमें, जीवन है वो धाम
कभी धूप, तो कभी छांव
ऊपर वाला पासा फेंके, नीचे चलते दांव
कभी धूप, तो कभी छांव

भले भी दिन आते, जगत में, बुरे भी दिन आते
कड़वे–मीठे फल करम के, यहाँ सभी पाते
कभी सीधे कभी उल्टे पड़ते, अजब समय के पाँव
कभी धूप, तो कभी छांव
सुख–दुःख दोनों रहते जिसमें, जीवन है वो धाम
कभी धूप, तो कभी छांव

क्या खुशियाँ क्या गम, ये सब मिलते बारी–बारी
मालिक की मर्जी पे चलती, ये दुनिया सारी
ध्यान से खेना जग नदिया में, बन्दे अपनी नाव
कभी धूप, तो कभी छांव
सुख–दुःख दोनों रहते जिसमें, जीवन है वो धाम
कभी धूप, तो कभी छांव

पहिले शब्द पिछानिये, पीछे कीजै मोल।
पारख परखै रतन को, शब्द का मोल न तोल।।